डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मोक्ष, सत्र 9, चुनाव सूत्रीकरण, संख्या 4: विश्वास, सुसमाचार और बुलावा

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा मोक्ष पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 9 है, चुनाव, व्यवस्थित सूत्रीकरण, संख्या 4: विश्वास, सुसमाचार और बुलावा।

हम चुनाव, चुनाव और विश्वास, और फिर चुनाव और सुसमाचार से संबंधित कुछ निष्कर्षों के साथ मोक्ष या उद्धार के सिद्धांत पर अपने व्याख्यान जारी रखते हैं।

चुनाव और विश्वास। पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से सिखाता है कि उद्धार का साधन मसीह में विश्वास है। यह प्रेरितों के काम में स्पष्ट है जहाँ पौलुस और सीलास फिलिप्पी के जेलर से कहते हैं, उद्धरण, प्रभु यीशु पर विश्वास करो, और तुम और तुम्हारा घराना उद्धार पाओगे।

प्रेरितों के काम 16:31. पौलुस स्पष्ट रूप से कहता है, उद्धरण, परमेश्वर की धार्मिकता यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा उन सभी के लिए है जो विश्वास करते हैं क्योंकि कोई भेद नहीं है, रोमियों 3:22. कई अंशों में, हम सीखते हैं कि चुनाव विश्वास का कारण है, और विश्वास चुनाव का परिणाम है।

यूहन्ना 6:35 में, यीशु द्वारा उसके पास आने को उस पर विश्वास करने के रूप में परिभाषित करने के बाद, वह कहता है, जो कोई पिता मुझे देता है वह मेरे पास आएगा, और जो मेरे पास आता है, मैं उसे बाहर नहीं निकालूँगा। पिता द्वारा लोगों को यीशु को देना यूहन्ना के चुनाव के चित्रों में से एक है। पिता द्वारा यीशु को दिया गया हर कोई उसके पास आएगा, और उस पर विश्वास करेगा।

यहाँ, यूहन्ना सिखाता है कि चुनाव विश्वास से पहले होता है। दूसरा, प्रेरितों के काम 13 48 में, जब पौलुस और बरनबास यहूदियों से पिसिदिया के अन्ताकिया में अन्यजातियों की ओर मुड़े, तो बहुत से अन्यजातियों ने सुसमाचार पर विश्वास किया। लूका ने चुनाव और विश्वास को एक साथ जोड़ा है।

जब अन्यजातियों ने यह सुना, तो वे आनन्दित हुए और प्रभु के वचन का आदर किया, और जितने अनन्त जीवन के लिए नियुक्त किए गए थे, उन सब ने विश्वास किया। प्रेरितों के काम 13 47 48. पाठ ईश्वरीय की ओर संकेत करता है, और पाठ अन्यजातियों के विश्वास से पहले अनन्त जीवन के लिए ईश्वरीय नियुक्ति को दर्शाता है।

डेविड पीटरसन ने अपनी टिप्पणी, *द एक्ट्स ऑफ द एपोस्टल्स*, पिलर ऑफ द न्यू टेस्टामेंट कमेंट्री सीरीज, पृष्ठ 399 से 400 में लिखा है कि ल्यूक इस बात की ओर ध्यान आकर्षित करता है कि किस तरह परमेश्वर अपने चुने हुए लोगों को बुलाने और उन्हें बचाने के लिए सुसमाचार का उपयोग करता है। जो लोग राष्ट्रों में से प्रभु को खोजते हैं, वे वे हैं जिन्हें उसने पहले ही अपना होने

का दावा कर लिया है। फिर भी ऐसा तब होता है जब परमेश्वर उन्हें सुसमाचार की घोषणा के माध्यम से विश्वास करने में सक्षम बनाता है।

उद्धरण समाप्त। परमेश्वर ने लोगों को उद्धार के लिए नियुक्त किया और फिर उन्हें सुसमाचार के प्रचार में मसीह के पास खींचा। एक बार फिर, चुनाव विश्वास का कारण है, न कि उसका परिणाम।

तीसरा, पौलुस हमें उसी निष्कर्ष पर ले जाता है। वह परमेश्वर के प्रति अपने प्रेमपूर्ण चुनाव के लिए आभारी है, जिसके परिणामस्वरूप थिस्सलुनीकियों का उद्धार हुआ। उद्धरण: हे भाइयो और बहनो, प्रभु के प्रिय, हमें तुम्हारे लिए हमेशा परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, क्योंकि आरम्भ से ही परमेश्वर ने तुम्हें आत्मा के द्वारा पवित्रीकरण और सत्य पर विश्वास के द्वारा उद्धार के लिए चुना है।

2 थिस्सलुनीकियों 2:13. अपने प्रेम और इच्छा में, परमेश्वर अपने लोगों को उद्धार के लिए हमेशा के लिए चुनता है। फिर वह प्रारंभिक पवित्रता और विश्वास के माध्यम से इतिहास में उस चुनाव के परिणामों को प्रकट करता है।

इस प्रकार विश्वास चुनाव का परिणाम है। रोमियों नौ में, पॉल कहते हैं कि परमेश्वर ने याकूब को चुना और एसाव को जन्म से पहले ही अस्वीकार कर दिया, ताकि चुनाव के अनुसार परमेश्वर का उद्देश्य कायम रहे। रोमियों 9:11.

कुछ आयतों के बाद, जब प्रेरित ने निष्कर्ष निकाला, तो उसने उद्धार के लिए सभी मानवीय प्रयासों को खारिज कर दिया, जिसमें विश्वास भी शामिल है। इसलिए, उद्धार मानवीय इच्छा या प्रयास पर निर्भर नहीं है, बल्कि परमेश्वर पर निर्भर है, जो दया दिखाता है। रोमियों 9:16.

यूहन्ना, लूका और पौलुस इस बात से सहमत हैं। परमेश्वर के शाश्वत चुनाव का परिणाम विश्वास, चुनाव और सुसमाचार है। चुनाव एक बाइबलीय सिद्धांत है, लेकिन यह एकमात्र सिद्धांत नहीं है।

और अगर हमें इसे सही तरीके से समझना है, तो हमें इसे ईसाई धर्म के अन्य सत्यों के साथ संबंध और अनुपात में देखना होगा। एक कदम पीछे हटकर यह पूछना मददगार हो सकता है कि हम क्यों बचाए गए हैं? बाइबल कई तरीकों से इसका उत्तर देती है, जिसकी शुरुआत अंतिम कारण से होती है। फिर से, यह एक दोहराव है, लेकिन मुझे लगता है कि शायद यह हमारी मदद करेगा।

शायद हम इसे दूसरी बार सुनकर समझ जाएँ क्योंकि परमेश्वर प्रशंसा के पात्र हैं, क्योंकि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है, क्योंकि परमेश्वर ने हमें बचाने की योजना बनाई, क्योंकि यीशु हमारे लिए मरा, क्योंकि हमने सुसमाचार सुना, क्योंकि पवित्र आत्मा ने हमें प्रेम, पाप के बारे में दोषी ठहराया, और हमें विश्वास की ओर खींचा क्योंकि हमने मसीह पर भरोसा किया। हमारा उद्धार परमेश्वर की महिमा, परमेश्वर के प्रेम, परमेश्वर की योजना, मसीह की मृत्यु, आत्मा के कार्य, सुसमाचार संदेश और मसीह में हमारे विश्वास से जुड़ा हुआ है। हमारा विश्वास हमें नहीं बचाता।

अपने उद्धार का स्रोत, आधार या कारण नहीं होते।

परमेश्वर है। वह उद्धारकर्ता है। हम बच गए हैं।

वह उद्धारक है। हम छुड़ाए गए हैं। लेकिन उद्धार विश्वास के माध्यम से अनुग्रह से होता है।

इसलिए, हम भरोसा करते हैं, हम विश्वास करते हैं, हम विश्वास रखते हैं, हम पश्चाताप करते हैं। इफिसियों 2, 8-9। हम कारण नहीं हैं, लेकिन हम सक्रिय हैं क्योंकि हम विश्वास के माध्यम से उद्धार प्राप्त करते हैं।

इसके अलावा, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि पौलुस सिखाता है कि उद्धार सत्य के वचन, आपके उद्धार के सुसमाचार, इफिसियों 1, 13 को सुनने के माध्यम से आता है। मिशन के बारे में बात किए बिना चुनाव के बारे में बात करने वाला कोई भी व्यक्ति बाइबल के साथ न्याय करने में विफल रहता है। उत्पत्ति 12:1-3 में, परमेश्वर अब्राहम को चुनता है।

बेनिन के बरनबी ए सोहोटो और केन्या के सैमुअल नेगीवा मददगार तरीके से बताते हैं कि कैसे परमेश्वर अब्राहम को पाँच मैं-इच्छाओं के रूप में वादे देता है। मैं तुम्हें एक महान राष्ट्र बनाऊँगा। मैं तुम्हें आशीर्वाद दूँगा। मैं तुम्हारा नाम महान बनाऊँगा। मैं उन लोगों को आशीर्वाद दूँगा जो तुम्हें आशीर्वाद देते हैं। मैं उन लोगों को शाप दूँगा जो तुम्हें शाप देते हैं। और परमेश्वर अब्राहम को नियुक्त करता है, तुम एक आशीर्वाद होगे, और पृथ्वी पर सभी लोग तुम्हारे माध्यम से आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

अब्राहम को मिशन के लिए चुना गया है। निर्गमन 19:5-6 में, परमेश्वर ने इस्राएल को चुनने का वर्णन किया है। वे उसके वाचा के लोग हैं, उसकी बहुमूल्य संपत्ति हैं, उसके याजकों का राज्य है, उसका पवित्र राष्ट्र है।

यह विशिष्टता अद्‌भुत है। सभी राष्ट्रों में से, तुम मेरे हो, भगवान कहते हैं। इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि भगवान की विशिष्टता सार्वभौमिकता के लिए है।

सभी राष्ट्रों में से तुम मेरे हो, और सारी पृथ्वी मेरी है, इसलिए तुम मेरे लिए याजकों का राज्य और एक पवित्र राष्ट्र होगे। परमेश्वर बचाने के लिए एक मिशन पर है, और वह अपने चुने हुए लोगों के माध्यम से राष्ट्रों तक पहुँचने की योजना बना रहा है। वे अपने पवित्र राष्ट्र के रूप में अपनी विशिष्टता के माध्यम से उसके और उसके तरीकों की गवाही देंगे, और वे याजकों के राज्य के रूप में अपनी घोषणा के माध्यम से उसके लिए गवाही देंगे।

उद्धरण, राष्ट्रों तक ईश्वर का ज्ञान पहुँचाना और राष्ट्रों को ईश्वर के साथ प्रायश्चित के साधनों तक पहुँचाना। यह उद्धरण क्रिस्टोफर राइट, *द मिशन ऑफ़ गॉड*, एक प्रसिद्ध पुस्तक से लिया गया है। आईवीपी, 2006, पृष्ठ 331।

रोमियों 9 और 10 में पौलुस ने शांतिपूर्वक लिखा है। ध्यान दें कि वह उद्धार के इतिहास पर अपने अविश्वसनीय रूप से जटिल उपचार को कैसे शुरू और समाप्त करता है। इस्राएल, चर्च, ईश्वरीय चुनाव और मानवीय जिम्मेदारी।

वह अपने लोगों, यहूदियों के उद्धार के लिए अपने गहन और निरंतर बोझ को बताते हुए अपने धार्मिक प्रवचन की शुरुआत करता है। पॉल उनके उद्धार के लिए इतना तरसता है कि अगर यह वास्तव में संभव होता तो वह उनके उद्धार के लिए नरक में जाने के लिए लगभग तैयार होता। रोमियों 9:1 से 5. फिर, एक भारी और विस्तृत ग्रंथ के बाद, पॉल यहूदियों के धर्मांतरण के लिए अपनी गहरी इच्छा और प्रार्थना पर जोर देता है।

वह उन्हें उस उद्धरण की याद दिलाता है: जो कोई प्रभु का नाम पुकारेगा, वह उद्धार पाएगा। रोमियों 10:13. लेकिन दूसरे लोग यीशु पर विश्वास किए बिना यीशु को कैसे पुकारेंगे? वे सुसमाचार सुने बिना कैसे विश्वास करेंगे? और वे बिना किसी के बताए कैसे सुनेंगे? फिर पौलुस सुसमाचार की आवश्यकता को दोहराता है।

विश्वास सुनने से आता है और सुनना परमेश्वर के वचन, सुसमाचार के माध्यम से होता है। हम ऐसे अद्भुत लेकिन गूढ़ सत्यों पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं? अतीत की दो आवाज़ें बहुत मदद करती हैं। सबसे पहले, हम विनम्रतापूर्वक पूजा करते हैं जैसा कि 19वीं सदी के बैपटिस्ट पादरी चार्ल्स स्पर्जन ने याद दिलाया था, मैं परमेश्वर के रहस्यों को समझने की उम्मीद नहीं कर सकता, न ही मैं ऐसा करना चाहता हूँ।

अगर मैं ईश्वर को समझ पाता, तो वह सच्चा ईश्वर नहीं हो सकता। एक सिद्धांत जिसे मैं पूरी तरह से नहीं समझ सकता, वह ईश्वर का सत्य है, जिसका उद्देश्य मुझे समझना है। जब मैं चढ़ नहीं पाता, तो मैं घुटने टेक देता हूँ।

जब मैं वेधशाला नहीं बना पाता, तो मैं एक वेदी बना लेता हूँ। अनंत ईश्वर को समझने में हमारे हमेशा चलने वाले समानांतर के बारे में सपने देखना कितना बेकार है। उसका ज्ञान हमारे लिए बहुत अद्भुत है।

यह बहुत ऊँचा है। हम इसे प्राप्त नहीं कर सकते। बेशक, यह भजन 139 का एक संकेत है।

दूसरा, हम सुसमाचार को साझा करते हैं जैसा कि बैपटिस्ट मिशनरी विलियम कैरी ने जोर दिया, उद्धरण, कि हमारे धन्य प्रभु ने हमसे प्रार्थना करने की मांग की है कि उसका राज्य आए और उसकी इच्छा पृथ्वी पर पूरी हो जैसे स्वर्ग में होती है। यह हमारे लिए न केवल शब्दों द्वारा उस घटना की अपनी इच्छा व्यक्त करने के लिए, बल्कि उसके नाम के ज्ञान को फैलाने के लिए हर वैध तरीके का उपयोग करने के लिए भी आवश्यक है। महान चीजों की अपेक्षा करें।

महान कार्य करने का प्रयास करें। क्या कारण की अच्छाई, ईश्वर और ईसाईयों के प्राणी के रूप में हम पर जो कर्तव्य हैं, और हमारे साथी मनुष्यों की नाशवान स्थिति हमें जोर से नहीं बुलाती कि हम सब कुछ जोखिम में डालें और उनके लाभ के लिए हर उचित प्रयास का उपयोग करें। चुनाव का सिद्धांत, सुसमाचार प्रचार में बाधा डालने के बजाय, यदि बाइबल की संपूर्ण शिक्षा के प्रकाश में सही ढंग से समझा जाए, तो हमें सुसमाचार का प्रचार करने के लिए प्रेरित करता है ताकि हम लोगों तक उद्धार का संदेश पहुँचा सकें, जिस पर उन्हें बचाए जाने के लिए विश्वास करना चाहिए।

हमारा अगला विषय है बुलावा। एक बहुत ही संक्षिप्त बाइबिल सारांश के बाद, हम बुलावे के व्यवस्थित निरूपणों की जांच करना चाहते हैं, जो सुसमाचार के निमंत्रण के रूप में बुलावे को प्रदर्शनकारी आह्वान, प्रभावकारी आह्वान के रूप में बुलावे से अलग करता है। बुलावा अक्सर किसी के नाम की पहचान करने या किसी को दिए गए निमंत्रण को दर्शाने के लिए उपयोग किया जाता है।

इसलिए, दोनों नियमों में बुलावा व्यापक रूप से इस्तेमाल किया गया है। हालाँकि, यह शब्द विशेष रूप से ईश्वर के बुलावे को संदर्भित कर सकता है, दोनों सुसमाचार बुलावा जो लोगों को यीशु में विश्वास करने के लिए आमंत्रित करता है और वह प्रभावी बुलावा जिसके द्वारा ईश्वर सुसमाचार बुलावे के माध्यम से लोगों को उद्धार की ओर ले जाता है। सुसमाचार बुलावा ईश्वर द्वारा बिना किसी भेदभाव के सभी के पास जाने का इरादा रखता है।

यह उन सभी के लिए एक आह्वान है जो सुसमाचार पर विश्वास करेंगे। प्रभावशाली आह्वान या प्रभावी आह्वान स्वयं परमेश्वर द्वारा, संप्रभुतापूर्वक, जैसा कि वह चुनता है, सुसमाचार के आह्वान के माध्यम से जारी किया जाता है। इसे एक प्रभावी या प्रभावकारी आह्वान कहा जाता है क्योंकि परमेश्वर इसे जारी करता है, और लोग उस आह्वान का जवाब देते हैं।

परमेश्वर लोगों को उद्धार की ओर लाने के लिए सुसमाचार के आह्वान के माध्यम से प्रभावशाली आह्वान में सुसमाचार के आह्वान का उपयोग करता है। उद्धार परमेश्वर का कार्य है, जो सुसमाचार के उनके मुफ़्त सार्वभौमिक प्रस्ताव और उनके प्रभावशाली आह्वान दोनों में है। बुलाना क्रिया के आह्वान और संज्ञा के आह्वान के दोनों नियमों में उपयोग किए जाने के तरीके का एक संक्षिप्त बाइबिल सारांश था।

यह बहुत संक्षिप्त है, लेकिन यह है। बुलावा, व्यवस्थित सूत्रीकरण। उद्धार के लिए लोगों को बुलाना, उद्धार के सिद्धांत, सोटेरियोलॉजी का एक उल्लेखनीय और अक्सर उपेक्षित विषय है।

इस आह्वान के दो पहलू हैं। सुसमाचार का आह्वान सार्वभौमिक है। चर्च को सभी लोगों को बिना भेदभाव के सुसमाचार का प्रचार करना है।

यदि कैल्विनवाद के नाम पर कोई चर्च या व्यक्ति ऐसा नहीं करता है, तो वे केवल परमेश्वर के वचन की अवज्ञा कर रहे हैं। और मैं इसे, जैसा कि चर्च ने ऐतिहासिक रूप से कहा है, अति-कैल्विनवाद कहूँगा। शास्त्र सिखाता है, और अनुभव दिखाता है कि सुसमाचार सुनने वाले सभी लोग मसीह में विश्वास नहीं करते हैं।

परमेश्वर उन लोगों को उनके अविश्वास के लिए जिम्मेदार ठहराता है जो विश्वास करने से इनकार करते हैं। यूहन्ना 3:18, परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत को दण्डित करे, परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। जो कोई उस पर विश्वास करता है, वह दण्डित नहीं होता, परन्तु जो कोई विश्वास नहीं करता, यूहन्ना 3:18, वह पहले से ही दण्डित है, क्योंकि उसने परमेश्वर के इकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।

यह अंश अंतिम दिन के निर्णयों की भाषा का उपयोग करता है, निंदा और निंदा नहीं, जिसे निंदा और औचित्य के रूप में बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। यूहन्ना शब्द का उपयोग नहीं करता है, लेकिन यही अवधारणा है। वे घटनाएँ अंतिम दिन से संबंधित हैं, लेकिन वे पहले ही साकार हो चुकी हैं; अर्थात्, मानव जाति की अनंत नियति का विषय।

वह विषय पहले से ही है और अभी तक नहीं है। पहले से ही, सुसमाचार के प्रचार में, लोगों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर, मानव जाति दो समूहों में विभाजित है, वे जो दोषी नहीं हैं और वे जो दोषी हैं, और अंतिम दिन उस भेदभाव को सत्यापित करेगा। बेशक, अब सुसमाचार सुनने वाले लोग, जैसा कि यह था, उन लोगों से आगे बढ़ सकते हैं जो दोषी नहीं हैं, उन लोगों से जो दोषी हैं, जो दोषी हैं, जो दोषी हैं, जो दोषी नहीं हैं या जो न्यायसंगत नहीं हैं, क्योंकि वे प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करते हैं।

मनुष्य को उसके अविश्वास के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है। यूहन्ना 8:24 हमें बताता है, वास्तव में, मुझे एक बार फिर तीन पर रुकना चाहिए, यूहन्ना 3:36, जो कोई भी पुत्र पर विश्वास करता है , उसका अनन्त जीवन है। अब, जो कोई पुत्र की बात नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर बना रहेगा।

बाइबल के अनुसार अविश्वास दोषी है, स्पष्ट रूप से ऐसा ही है। यूहन्ना 8:24, यीशु ने यहूदियों से कहा जो उसका विरोध कर रहे थे, मैंने तुमसे कहा कि तुम अपने पापों में मरोगे, क्योंकि यदि तुम विश्वास नहीं करोगे कि मैं वही हूँ, मैं वही हूँ जिसका मैं दावा करता हूँ, तो तुम अपने पापों में मरोगे। 2 थिस्सलुनीकियों 1:8 में मसीह के लौटने की बात कही गई है, जो उन लोगों को दण्ड देगा जो परमेश्वर को नहीं जानते, और जाहिर है कि यह वही समूह है, यहाँ तक कि वे लोग भी जो प्रभु यीशु के सुसमाचार का पालन नहीं करते हैं।

प्रभु यीशु स्वर्ग से प्रकट होने जा रहे हैं, 2 थिस्सलुनीकियों 1:7, अपने शक्तिशाली स्वर्गदूतों के साथ धधकती आग में, उन लोगों से बदला लेने के लिए जो परमेश्वर को नहीं जानते, और उन लोगों से जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार का पालन नहीं करते। सुसमाचार का पालन करें? हाँ, सुसमाचार एक आदेश है। यदि आप इसका पालन करते हैं, तो आप सुसमाचार पर विश्वास करते हैं।

यदि आप इसका पालन नहीं करते हैं, तो आप इस पर विश्वास नहीं करते हैं। पौलुस और पतरस दोनों इस तरह की शब्दावली का उपयोग करते हैं। वे प्रभु की उपस्थिति और उसकी शक्ति की महिमा से दूर अनन्त विनाश की सजा भुगतेंगे, जब वह उस दिन अपने संतों में महिमा पाने और उन सभी के बीच आश्चर्यचकित होने के लिए आएगा जिन्होंने विश्वास किया है।

परमेश्वर उन लोगों को उनके अविश्वास के लिए जिम्मेदार ठहराता है जो विश्वास करने से इनकार करते हैं। 1 यूहन्ना 5 भी यही बात सिखाता है। जो कोई परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है, उसके पास स्वयं में गवाही है।

जो कोई परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता, उसने उसे झूठा ठहराया, क्योंकि उसने उस गवाही पर विश्वास नहीं किया जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दी है। और यह गवाही यह है कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है, और यह जीवन उसके पुत्र में है। जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है।

जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं है, उसके पास जीवन नहीं है। इस प्रकार यहाँ शास्त्र संपन्न और वंचितों के बारे में बात करता है। यह प्रसिद्धि या धन नहीं है जो उन्हें अलग पहचान देता है या एथलेटिक कौशल या धन नहीं है।

जो कोई भी परमेश्वर के पुत्र को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करता है, उसके पास अनन्त जीवन है। जिसके पास वह नहीं है, उसके पास वह जीवन नहीं है जो वास्तव में मायने रखता है, वह है अनन्त जीवन। पवित्रशास्त्र वास्तविक मानवीय जिम्मेदारी की पुष्टि करता है और साथ ही, पूर्ण ईश्वरीय संप्रभुता सिखाता है।

इस प्रकार, सुसमाचार के आह्वान के साथ-साथ, एक प्रभावी आह्वान भी है जिसके द्वारा परमेश्वर कुछ लोगों को मसीह में उद्धार की ओर आकर्षित करता है। परमेश्वर सुसमाचार के आह्वान के माध्यम से अपना प्रभावी आह्वान जारी करता है। परंपरागत रूप से, बुलावे के इन दो पहलुओं को क्रमशः बाहरी आह्वान और आंतरिक आह्वान कहा जाता था।

मैं इस शब्दावली की रचनात्मक आलोचना करना चाहता हूँ। सभी लोग सुसमाचार सुनते हैं, उद्धार का संदेश उनके बाहर से। अगर ईसाई अपना काम करते हैं तो यह उनके कानों में फिर से पड़ता है।

यह बाहरी आह्वान है , लेकिन केवल कुछ ही बचाए जाते हैं। इन्हें उद्धार के लिए परमेश्वर का आंतरिक प्रभावी आह्वान प्राप्त होता है। हालाँकि, ये पदनाम कुछ हद तक भ्रामक थे, क्योंकि इनका अर्थ यह समझा जा सकता था कि कुछ लोगों को केवल बाहरी आह्वान प्राप्त होता है और कुछ को केवल आंतरिक आह्वान।

हालाँकि, सच में, आंतरिक आह्वान बाहरी आह्वान के माध्यम से काम करता है। इस प्रकार, बेहतर नाम बाहरी आह्वान और बाहरी स्लैश आंतरिक आह्वान होते। हालाँकि, इससे भी बेहतर नाम सुसमाचार आह्वान और प्रभावी आह्वान हैं।

पहला सुसमाचार के आमंत्रण के रूप में बुलावे की बात करता है। सुसमाचार का आह्वान सभी को, सभी को जाना चाहिए। हम ईश्वर नहीं हैं।

हम उद्धार के लिए लोगों को नहीं चुनते। हम क्रूस पर मरकर फिर से जीवित नहीं होते, और हम लोगों को उद्धार के लिए प्रभावी ढंग से नहीं बुलाते। डॉर्ट के सिद्धांतों के अनुसार, हम बेतरतीब ढंग से, जो कोई भी चाहे उसे उद्धार के लिए बुलाते हैं।

हर किसी को स्वतंत्र रूप से सुसमाचार प्रदान करना, लेकिन उस सुसमाचार आह्वान के माध्यम से अपने रहस्यमय आंतरिक प्रभुसत्ता के साथ काम करने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करना एक

प्रभावी या प्रभावकारी आह्वान है। पहला सुसमाचार आह्वान सुसमाचार आमंत्रण के रूप में बुलावे की बात करता है। दूसरा प्रभावी आह्वान, प्रभावकारी आह्वान प्रदर्शनकारी आह्वान के रूप में बुलावे की बात करता है।

इसके बारे में थोड़ी देर में और अधिक जानकारी दी जाएगी। सुसमाचार के निमंत्रण के रूप में बुलावा। इन शिक्षाओं को एक बड़े बाइबिल परिप्रेक्ष्य में रखने के लिए, हम यह ध्यान में रखते हुए व्यवस्थित करना जारी रखते हैं कि परमेश्वर खोए हुए लोगों के न्याय से प्रसन्न नहीं होता है।

जैसा कि भविष्यवक्ता यहेजकेल ने कहा, यहेजकेल 18:23, क्या मैं दुष्टों की मृत्यु से प्रसन्न होता हूँ? यह प्रभु परमेश्वर की घोषणा है। इसके बजाय, क्या मैं तब प्रसन्न नहीं होता जब वह अपने मार्ग और जीवन से फिर जाता है? फिर से, निर्गमन 18:23 और मुझे खेद है यहेजकेल 18:23, और वही भविष्यवक्ता यहेजकेल के 33:11 को देखता है, मैं किसी की मृत्यु से प्रसन्न नहीं होता। यह प्रभु परमेश्वर की घोषणा है।

इसलिए पश्चाताप करो और जीवित रहो यहेजकेल 33:11। इसलिए, यशायाह घोषणा करता है, मेरी ओर फिरो और पृथ्वी के दूर-दूर के सभी लोगों को बचाओ क्योंकि मैं ही परमेश्वर हूँ और कोई दूसरा नहीं है। यशायाह 45:22। इस प्रकार पुराने नियम में पापियों को बचाने की परमेश्वर की इच्छा की घोषणा की गई है। यशायाह में कितना सुंदर श्लोक है।

प्रभु कहते हैं, "पृथ्वी के दूर दूर के सभी लोग मेरी ओर फिरें और उद्धार पाएं, क्योंकि मैं ही ईश्वर हूं, और कोई दूसरा नहीं है।" यशायाह 45:22. योना का नीनवे के लिए अनिच्छुक मिशन भी ईश्वर के हृदय को दर्शाता है। जैसा कि भविष्यवक्ता ने कबूल किया, उद्धरण, इसीलिए मैं सबसे पहले तरसुस की ओर भागा।

मैं जानता था कि तू अनुग्रहकारी और दयालु परमेश्वर है, कोप करने में धीरजवन्त, करुणा से भरपूर, और विपत्ति भेजने से मन नहीं बहलाता। योना 4:2. योना भाग गया क्योंकि उसे डर था कि परमेश्वर योना के राजनीतिक शत्रुओं पर दया दिखाएगा। अरे!

नए नियम में पतरस 2 पतरस 3:9 में यही संदेश देता है। प्रभु तुम्हारे साथ धीरज रखता है, और नहीं चाहता कि कोई नाश हो, बल्कि यह कि सब पश्चाताप करें। यीशु और उसके प्रेरित नए नियम में सुसमाचार के आह्वान की घोषणा करते हैं। यह परमेश्वर और प्रचारकों की सच्ची इच्छा है कि पापी पश्चाताप करें, विश्वास करें और बचाए जाएँ।

डॉर्ट के धर्मसभा में आर्मिनियनों ने सुधारवादियों पर यह झूठा दावा करने का आरोप लगाया कि सुसमाचार प्रस्ताव , सुसमाचार आह्वान, ईश्वर की ओर से एक ईमानदार प्रस्ताव था। हाँ, यह प्रचारकों की ओर से एक ईमानदार प्रस्ताव है। हम मानते हैं कि आप, हमारे कैल्विनिस्ट भाई, बिना बचाए लोगों को बचाना चाहते हैं, लेकिन हम यह नहीं देख पा रहे हैं कि यह आपके धर्मशास्त्र के साथ कैसे फिट बैठता है कि आप दावा करते हैं कि यह ईश्वर की ओर से भी एक इच्छा है।

आप हमारी तरह पूरी तरह से भ्रष्टता में विश्वास करते हैं, लोगों के बचाए जाने की पूरी तरह से अक्षमता में, लेकिन आप बिना शर्त चुनाव में भी विश्वास करते हैं जैसा कि हम नहीं करते, सीमित या विशेष प्रायश्चित जो हम नहीं करते, और अप्रतिरोध्य अनुग्रह जो हम नहीं करते। आप यह दावा कैसे कर सकते हैं? डॉर्ट के कैल्विनिस्ट अविचलित थे। बाइबल इन दोनों बातों की शिक्षा देती है।

परमेश्वर की पूर्ण संप्रभुता और उद्धार, जैसा कि उनके बिना शर्त चुनाव, विशेष प्रायश्चित और पवित्र आत्मा की अप्रतिरोध्य कृपा से प्रमाणित होता है, लेकिन उसी तरह, यह स्पष्ट रूप से और कई स्थानों पर सिखाता है कि सुसमाचार को मुफ़्त में पेश किया जाना चाहिए और लोगों को बचाने की इच्छा केवल उपदेशक के लिए ही नहीं बल्कि स्वयं परमेश्वर के लिए भी सच है। सुसमाचार का आह्वान परमेश्वर और उपदेशकों की ओर से एक ईमानदार इच्छा है कि पापी पश्चाताप करें, विश्वास करें और बचाए जाएँ। मुझे लगता है कि मैं अपने धार्मिक विरोधियों से कहूँगा कि वे मेरे प्रति वही उदारता दिखाएँ जो मैं उनके प्रति दिखाता हूँ।

अगर कोई व्यक्ति मेरे धर्मशास्त्र से असहमत है और असंगत है, धर्मशास्त्रीय रूप से असंगत है, और फिर भी बाइबल के प्रति वफादार है, तो मैं इससे खुश हूँ। मैं नहीं चाहूँगा कि वे धर्मशास्त्रीय रूप से अधिक सुसंगत और बाइबल के प्रति अधिक बेईमान हों। उनके विचारों में असंगतियाँ होने दें, और हम असंगतियों, विरोधाभासों, विरोधाभासों, रहस्यों, जो भी आप चाहें, के लिए कुछ अच्छे नामों के बारे में सोच सकते हैं।

मैं बाइबल के अनुसार चलने में आनंद लेता हूँ, और दिन के अंत में, मैं धर्मशास्त्रीय रूप से चतुर या पूर्ण या सुसंगत होने की तुलना में बाइबल के प्रति वफादार होने में अधिक रुचि रखता हूँ, और मैं उन लोगों से भी अनुरोध करूँगा जो मुझसे असहमत हैं कि वे मेरे प्रति भी यही शिष्टाचार दिखाएँ। इस बात पर खुशी मनाइए कि पीटरसन अपने कैल्विनवाद में असंगत हैं, अगर आप इसे इस तरह देखते हैं, लेकिन बाइबल पर विश्वास करते हैं जब यह कहता है कि जब यह कहता है कि भगवान खोए हुए लोगों का उद्धार चाहते हैं और सुसमाचार की पेशकश उनके और प्रचारकों की ओर से एक ईमानदार पेशकश है। हम और प्रभु चाहते हैं कि पापी पश्चाताप करें, विश्वास करें और बचाए जाएँ।

इसमें सुसमाचार और उसके निमंत्रण और वादों को साझा करना शामिल है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, इस आह्वान में सुसमाचार शामिल है। हम खो गए हैं और खुद को बचा नहीं सकते।

परमेश्वर का पुत्र पापियों को छुड़ाने के लिए मरा और जी उठा, और उस पर विश्वास करने से ही हम बच सकते हैं। सुसमाचार में एक निमंत्रण शामिल है, और अगर कोई इन शब्दों को सुन रहा है और मसीह को नहीं जानता है, तो हम ईमानदारी से आपको उद्धार के लिए केवल यीशु पर भरोसा करने के लिए आमंत्रित करते हैं। आप खुद को नहीं बचा सकते।

सुसमाचार में विश्वास की विनम्रता की आवश्यकता है, अपने स्वयं के प्रयासों से हटकर प्रभु यीशु मसीह की ओर देखना, जो अकेले ही बचा सकते हैं, और उन पर तथा उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान पर भरोसा करना, क्योंकि परमेश्वर द्वारा मुझे क्षमा करने और मुझे अनंत जीवन प्रदान

करने का यही एकमात्र तरीका है। सुसमाचार में एक आमंत्रण शामिल है, जिसमें लोगों से उद्धार के लिए केवल मसीह पर भरोसा करने के लिए कहा गया है। सुसमाचार में वादे, अनंत जीवन और विश्वास करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए पापों की क्षमा शामिल है।

बाइबल के कई ग्रंथों में सुसमाचार का उल्लेख है। यूहन्ना 6:40, मेरे पिता की इच्छा यह है कि जो कोई पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे, उसे अनन्त जीवन मिले, और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँगा। यूहन्ना 6:40.

प्रेरितों के काम 16:31. प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करो और तुम और तुम्हारा परिवार, तुम्हारा घराना उद्धार पाएगा। गलातियों 2:16.

मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, परन्तु यीशु मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरता है। हम ने भी मसीह यीशु पर विश्वास किया है। यह इसलिये हुआ कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं, परन्तु मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरें, क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई मनुष्य धर्मी न ठहरेगा।

फिर से, गलातियों 2:16. इब्रानियों 9:11 और 12. मसीह आनेवाली अच्छी बातों का महायाजक बनकर प्रकट हुआ है, और उसने अपने ही लहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश करके अनन्त छुटकारा प्राप्त किया है।

इब्रानियों 9:11 और 12. परमेश्वर चाहता है कि सुसमाचार का आह्वान सार्वभौमिक हो और बिना किसी भेदभाव के सभी तक पहुंचे। परमेश्वर पापी संसार से प्रेम करता है और उसने इसे बचाने के लिए अपना पुत्र दे दिया। यूहन्ना 3:16 और 17.

यीशु ने यरूशलेम द्वारा परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं और स्वयं को हठपूर्वक अस्वीकार करने पर अपना हृदय खोल दिया। मत्ती 23:37. यीशु ने विलाप किया, हे यरूशलेम, हे यरूशलेम, हे उस नगरी जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालती है, और अपने भेजे हुओं को पत्थरवाह करती है, कितनी बार मैं चाहता था कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठा करूं, परन्तु तुम ने न चाहा। अर्थात्, यीशु पापियों को विलाप करने के एक मुफ़्त प्रस्ताव के साथ संबोधित कर रहे थे कि यरूशलेम ने परमेश्वर के उनके मुफ़्त प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। गलील के उन शहरों में प्रचार करने और चमत्कार करने के बाद, जिन्होंने विश्वास नहीं किया, मत्ती 11 में यीशु के शब्दों के साथ हम इसे कैसे जोड़ सकते हैं? वह कहता है, हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ।

मत्ती 11:25 कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रगट किया है। हां, हे पिता, तेरी यही इच्छा थी। मेरे पिता ने सब कुछ मुझे सौंप दिया है, और कोई पुत्र को नहीं जानता, केवल पिता; और कोई पिता को नहीं जानता, केवल पुत्र, और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे।

यीशु उनके अविश्वास के लिए उन्हें कैसे दोषी ठहरा सकते हैं और फिर कह सकते हैं कि उन्हें पापियों के लिए पिता को संप्रभुतापूर्वक प्रकट करना चाहिए? मुझे नहीं पता, लेकिन दोनों को

सिखाया जाता है। अगली बात जो वह कहता है वह यह है। हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।

मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो और मुझसे सीखो, क्योंकि मैं दिल से नम्र और कोमल हूँ। मैं दिल से नम्र और नम्र हूँ, और तुम अपनी आत्माओं के लिए आराम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज है, मेरा बोझ हल्का है।

लगातार, शास्त्र पूर्ण ईश्वरीय संप्रभुता, वास्तविक मानवीय जिम्मेदारी को एक साथ रखता है। मैं पूरी तरह से नहीं समझता कि यह कैसे काम करता है, लेकिन मैं इसे स्वीकार करता हूँ। मैं इसे ईश्वर के वचन की शिक्षा के रूप में स्वीकार करता हूँ और इसे तीसरे बाइबिल रहस्य के रूप में स्वीकार करता हूँ।

मैं सावधान रहना चाहता हूँ। मैं रहस्यों को बाइबल में बताए गए सत्यों के रूप में परिभाषित करता हूँ जो ज़रूरी तो हैं ही, साथ ही जिन्हें मनुष्य, सीमित, सीमित, यहाँ तक कि बचाए गए मनुष्य भी पूरी तरह से एक साथ नहीं रख सकते। इनमें से दो सबसे बड़े हैं त्रिएकत्व का सिद्धांत।

ईश्वर एक है। ईश्वर तीन हैं। मैं जानता हूँ कि हम एकता और त्रित्व को अलग-अलग तरीके से परिभाषित करके दार्शनिक असंगति से बचने की कोशिश करते हैं।

मैं पूरी तरह से सहमत हूँ। आखिरकार ये दोनों ही बातें बाइबल से ही ली गई हैं। हालाँकि, हम इस बात पर ज़ोर देते हैं कि ईश्वर एक है, एक ईश्वर जो हमेशा तीन व्यक्तियों में विद्यमान रहता है।

हम विधर्मियों को बाहर रखते हैं और उन्हें अस्वीकार करते हैं, मापदंड तय करते हैं, लेकिन हम पूरी तरह से यह नहीं समझा सकते कि ईश्वर एक और तीन कैसे हैं। मसीह के व्यक्तित्व के लिए भी यही बात लागू होती है। अपने अवतार में, वह एक ही व्यक्ति में ईश्वर और मनुष्य दोनों हैं।

हम उन सत्यों की पुष्टि करते हैं। हम विधर्मियों को बाहर रखते हैं, जिससे मानदंड निर्धारित होते हैं, और हम इस तरह से बाइबल के बहुत से अंशों को समझ पाते हैं, लेकिन हम उन्हें पूरी तरह से समझ नहीं पाते। वे दो रहस्य, विरोधाभास और विरोधाभास, स्पष्ट रूप से बाइबल से संबंधित हैं और ईसाई धर्म के लिए आवश्यक हैं।

इनमें से किसी एक को नकारो, और तुम खो जाओगे। तीसरा, जो यह धारणा है कि पूर्ण ईश्वरीय संप्रभुता और वास्तविक मानवीय जिम्मेदारी, जवाबदेही और दोषसिद्धि संगत हैं, मोक्ष के लिए आवश्यक नहीं है। लेकिन मैं इसे बाइबल की उतनी ही शिक्षा मानता हूँ जितनी कि पहले दो।

यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि वे हैं, लेकिन यह उतना ही रहस्यमय है क्योंकि ये चीजें एक साथ रखी गई हैं। लूका 22:22. मनुष्य का पुत्र वैसे ही जाता है जैसा कि तय किया गया है।

भगवान ने अपने बेटे की मौत का आदेश दिया, लेकिन उस आदमी पर धिक्कार है जो उसे धोखा देता है। यहूदा अपने मालिक के साथ विश्वासघात के लिए जिम्मेदार और दोषी है। एक मिनट रुकिए।

भगवान ने ऐसा आदेश दिया। इससे यहूदा एक मोहरा बन जाता है, है न? नहीं। यहूदा ने मसीह को खुलेआम धोखा दिया, है न? हाँ।

इसका मतलब है कि परमेश्वर ने अपनी योजनाएँ बदल दी हैं। नहीं, यह सच नहीं है। दोनों बातें सच हैं।

परमेश्वर ही प्रभारी है। यहूदा कोई मोहरा नहीं है। यहूदा दोषी है।

उसने परमेश्वर की योजना में कोई परिवर्तन नहीं किया। हम पूरी तरह से समझ नहीं सकते कि मसीह का विश्वासघात किस तरह परमेश्वर की शाश्वत योजना की पूर्ति है और एक जिम्मेदार इंसान का दोषी कार्य है। फिर भी, यह यीशु के मुँह से निकली एक साँस, एक वाक्य में ही हो जाता है।

यीशु यरूशलेम के लिए अपनी बाहें फैलाते हैं, वह शहर जिसे परमेश्वर ने अपने नाम के लिए चुना था, वह शहर जिसने भविष्यवक्ताओं को मार डाला और उनके संदेश को बार-बार अस्वीकार कर दिया। फिर भी, वह अपनी बाहें फैलाते हैं, थके हुए और बोझिल लोगों को उद्धार के विश्राम के लिए अपने पास आने के लिए आमंत्रित करते हैं। मत्ती 11:28.

वह अपने अनुयायियों को सभी राष्ट्रों के लोगों को शिष्य बनाने की आज्ञा देता है। मत्ती 28:19. प्रेरितों ने भी यही संदेश दिया, उद्धरण, परमेश्वर अब सभी लोगों को हर जगह पश्चाताप करने की आज्ञा देता है।

प्रेरितों के काम 17, 30 और 31. परमेश्वर न केवल पापियों को पश्चाताप करने की आज्ञा देता है, बल्कि उनसे ऐसा करने की विनती भी करता है। वह ऐसा अपने प्रेरितों के माध्यम से करता है, जिनमें पौलुस भी शामिल है, उद्धरण, परमेश्वर हमारे माध्यम से अपनी अपील कर रहा है।

2 कुरिन्थियों 5:20. हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर से मेल मिलाप कर लो। 2 कुरिन्थियों 5:20.

परमेश्वर हम प्रेरितों के माध्यम से और उसके बाद से सुसमाचार के प्रचारकों के माध्यम से अपनी अपील कर रहा है। हम मसीह की ओर से परमेश्वर से मेल-मिलाप करने की विनती करते हैं। सुसमाचार एक आदेश है।

परमेश्वर अपने प्राणियों को विश्वास करने की आज्ञा देता है। सुसमाचार परमेश्वर के हृदय का प्रतिनिधित्व करता है। प्रचारक लोगों से अपने पापों से फिरकर मसीह पर विश्वास करने की विनती करते हैं।

हालाँकि सुसमाचार की पुकार सुनने वाले सभी लोग विश्वास नहीं करेंगे और बचाए नहीं जाएँगे, लेकिन उद्धार के लिए सुसमाचार की पुकार ज़रूरी है। रोमियों 10:8 से 17 में पौलुस इस पर सबसे विस्तृत और स्पष्ट शिक्षा देता है। यह विश्वास का संदेश है जिसे हम घोषित करते हैं।

यदि आप अपने मुँह से स्वीकार करते हैं, यीशु प्रभु है, और अपने दिल में विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जिलाया है, तो आप बच जाएँगे। एक व्यक्ति दिल से विश्वास करता है, जिसके परिणामस्वरूप धार्मिकता होती है, और एक व्यक्ति मुँह से स्वीकार करता है, जिसके परिणामस्वरूप उद्धार होता है। शास्त्र कहता है कि जो कोई भी उस पर विश्वास करता है, उसे शर्मिंदा नहीं किया जाएगा क्योंकि यहूदी और यूनानी के बीच कोई अंतर नहीं है क्योंकि सभी का एक ही प्रभु उन सभी को भरपूर आशीर्वाद देता है जो उसे पुकारते हैं।

क्योंकि जो कोई परमेश्वर का नाम पुकारेगा, वह उद्धार पाएगा। फिर वे उसका नाम कैसे पुकार सकते हैं, जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया? और उसके बारे में सुने बिना वे कैसे विश्वास कर सकते हैं? और प्रचारक के बिना वे कैसे सुन सकते हैं? और जब तक वे भेजे न जाएँ, जैसा लिखा है, वे कैसे प्रचार कर सकते हैं? शुभ समाचार लानेवालों के पाँव कितने सुन्दर हैं। परन्तु सब ने सुसमाचार का पालन नहीं किया।

यशायाह कहता है, हे प्रभु, हमारे संदेश पर किसने विश्वास किया है? इसलिए, विश्वास सुनने से आता है, और जो सुना जाता है वह मसीह के बारे में संदेश के माध्यम से होता है। रोमियों 10:8 से 17, क्रिश्चियन स्टैंडर्ड बाइबल। उद्धार का एकमात्र तरीका क्रूस पर चढ़ाए गए और जी उठे मसीह के बारे में संदेश सुनना है, पद 17, और उसकी प्रभुता को स्वीकार करना, पद 8। पॉल इसी तरह जोर देते हैं, उद्धरण, मैं सुसमाचार से शर्मिंदा नहीं हूं क्योंकि यह हर उस व्यक्ति के लिए उद्धार के लिए ईश्वर की शक्ति है जो विश्वास करता है, पहले यहूदी और फिर यूनानी के लिए भी।

यह सुसमाचार के आह्वान की पेशकश है जो कोई भी आएगा। प्रभावशाली आह्वान, प्रभावी आह्वान, प्रदर्शनकारी आह्वान के रूप में आह्वान। भाषण क्रिया सिद्धांत, जिसके बारे में मैं बहुत कम जानता हूँ, लोकोक्यूशन, इलोक्यूशन और परलोकेशन में अंतर करता है।

एक लोकुशन एक कथन है। एक इललोक्यूशन का संबंध उस व्यक्ति के उद्देश्य से होता है जिसने वह कथन किया है, और परलोकशन का संबंध उस कथन के परिणामों से होता है। सुसमाचार के आह्वान के अलावा पवित्रशास्त्र में आह्वान का प्रयोग अन्य तरीकों से भी किया जाता है।

इसका प्रयोग एक क्रियात्मक आह्वान के रूप में किया जाता है। अर्थात, जब परमेश्वर आंतरिक और अलौकिक रूप से पुकारता है, तो पुकार काम करती है। पुकार सुनी जाती है।

प्रभावी आह्वान में, परमेश्वर अपने आत्मा के द्वारा बहुत से लोगों के जीवन में आंतरिक और रहस्यमय तरीके से काम करता है, जो सुसमाचार के आह्वान को सुनते हैं, ताकि उन्हें अपने पुत्र में उद्धारकारी विश्वास की ओर आकर्षित किया जा सके। आह्वान आपस में जुड़े हुए हैं। सुसमाचार शक्तिशाली है, रोमियों 1.16। एक बीज की तरह जो जड़ पकड़ता है, मत्ती 13:1 से 23, याकूब 1:18, 1 पतरस 1:22 से 25, आत्मा विश्वास को सक्षम करने के लिए सुसमाचार का शक्तिशाली रूप से उपयोग करती है।

प्रेरितों के काम 13:48 और 49 में दोनों ही आह्वान काम कर रहे हैं। पौलुस और बरनबास के यहूदियों से अन्यजातियों की ओर मुड़ने के बाद, लूका ने बताया कि जब अन्यजातियों ने यह सुना, तो वे आनन्दित हुए और प्रभु के वचन का सम्मान किया। और वे सभी जो अनन्त जीवन के लिए नियुक्त किए गए थे, उन्होंने विश्वास किया, प्रेरितों के काम 13:48। प्रेरितों द्वारा सुसमाचार की मुफ्त पेशकश, उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना, और श्रोता की ओर से वास्तविक विश्वास एक साथ जुड़े हुए हैं।

यदि हम ईश्वरीय पक्ष पर अपने दृष्टिकोण को विस्तृत करें, तो हम देखेंगे कि धर्मग्रंथ हमारे अनंत काल में चुने जाने को समय पर बुलाए जाने से जोड़ता है, जैसा कि भारत के मैथ्यू एबेनेजर कहते हैं। यह ESV ग्लोबल स्टडी बाइबल, मैथ्यू एबेनेजर, द ग्रेट ट्रुथ्स ऑफ द बाइबल, पृष्ठ 1881 से है। मैंने पहले भी ऐसा किया है, लेकिन यह एक तरह से नया संदर्भ है।

परमेश्वर अपने लोगों को सुसमाचार के माध्यम से प्रभावशाली ढंग से बुलाता है। जिन्हें उसने पहले से नियत किया था, रोमियों 8:30, उन्हें उसने बुलाया भी। और जिन्हें उसने बुलाया, उन्हें उसने धर्मी भी ठहराया।

जिन्हें उसने धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी। रोमियों 9:23-24, क्या होगा यदि परमेश्वर ने ऐसा किया, कि अपनी महिमा का धन दया की वस्तुओं पर प्रगट करे, जिन्हें उसने महिमा के लिये पहिले से तैयार किया, अर्थात् हम पर, जिन्हें उसने न केवल यहूदियों में से, वरन अन्यजातियों में से भी बुलाया? पौलुस परमेश्वर द्वारा दया की वस्तुओं को चुनने, परमेश्वर, जो दया की वस्तुओं को बनाने वाला दिव्य कुम्हार है, को मसीह के सुसमाचार के द्वारा प्रथम शताब्दी के यहूदियों और अन्यजातियों को बुलाने के साथ जोड़ता है, मसीह के सुसमाचार के द्वारा प्रभावशाली ढंग से, ताकि सुसमाचार उनके मामलों में काम करे।

हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, 2 तीमुथियुस, 2 थिस्सलुनीकियों 2:13-14, 2 थिस्सलुनीकियों 2:13-14, हमें हमेशा तुम्हारे लिए परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, पौलुस कहता है, भाइयों और बहनों प्रभु के प्रिय हैं क्योंकि शुरू से ही परमेश्वर ने आत्मा द्वारा पवित्रता और सत्य पर विश्वास के माध्यम से उद्धार के लिए तुम्हें चुना है। उसने आपको हमारे सुसमाचार के माध्यम से इसके लिए बुलाया ताकि आप हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा प्राप्त कर सकें। जब परमेश्वर लोगों को सुसमाचार के माध्यम से प्रभावी ढंग से बुलाता है, तो वह अल्पकालिक और दीर्घकालिक दोनों परिणाम लाता है।

अल्पावधि में, परमेश्वर का इरादा प्रभावशाली बुलावे को एक ऐसा जीवन बनाने का है जो प्रशंसनीय हो। इफिसियों 4:1, मैं, प्रभु का कैदी, तुमसे विनती करता हूँ कि जो बुलावा तुम्हें मिला है उसके योग्य चाल चलो। यह मुझे एक महत्वपूर्ण सिद्धांत की याद दिलाता है जो मुझे कई साल पहले डीए कार्सन ने सिखाया था, एक लेख में जो उन्होंने स्क्रिप्चर एंड ट्रुथ नामक पुस्तक में लिखा था, जिसका मुझे विश्वास है कि उन्होंने सह-संपादन किया था।

उस समय, उन्होंने हमें सिखाया कि हमें शास्त्र के कार्य पर ध्यान देने की आवश्यकता है। इसने मुझे प्रभावित किया, और तब से मैं इससे प्रभावित हूँ। यह जानना ही पर्याप्त नहीं है कि बाइबल

क्या सिखाती है, हमें यह समझने के लिए भी कड़ी मेहनत करनी चाहिए कि यह जो सिखाती है, वह क्यों सिखाती है।

अब मैं अनुप्रयोगों को यहीं तक सीमित नहीं करता, लेकिन मुझे लगता है कि हमें इनसे शुरू करना चाहिए। यानी, अगर हम समझ सकते हैं कि परमेश्वर ने बाइबल की यह आयत, पैराग्राफ, किताब या यह शिक्षा, यह सिद्धांत क्यों दिया और फिर प्रार्थना और सेवकाई में, सेवक उस आयत, पैराग्राफ, अध्याय, किताब या सिद्धांत को उन उद्देश्यों की ओर ले जाता है जिसके लिए परमेश्वर ने कहा कि उसने इसे दिया है, तो उसमें शक्ति है। पवित्र आत्मा वचन को आशीर्वाद देता है ताकि वह वही करे जो परमेश्वर ने कहा था कि वह करना चाहता है।

यहाँ, पौलुस कहता है, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि जो बुलावा तुम्हें मिला है, उसके योग्य होकर चलो, इफिसियों 4:1। न केवल हमें सुसमाचार और प्रभावी बुलावे में अंतर करने के लिए बुलावा सिखाया जाता है, मुझे लगता है कि हम ऐसा कर रहे हैं, बल्कि हमें फिर परमेश्वर के लिए उन लोगों के रूप में जीना है जिन्हें बुलाया गया है और जो उचित तरीके से चलते हैं, उसके योग्य हैं, उस बुलावे के योग्य हैं, जो निश्चित रूप से हमें परमेश्वर और पवित्र आत्मा के सक्षम अनुग्रह पर बहुत अधिक भरोसा करने के लिए प्रेरित करता है। विशेष रूप से, परमेश्वर चाहता है कि उसका बुलावा हमारे जीवन में स्वतंत्रता, अन्य विश्वासियों के साथ सामंजस्य, परमेश्वर और मनुष्यों के सामने पवित्रता और उसके लोगों के जीवन में सुसमाचार के लिए कष्ट सहने की इच्छा उत्पन्न करे। स्वतंत्रता, गलातियों 5:13 , भाइयों और बहनों, आपको स्वतंत्र होने के लिए बुलाया गया था, केवल इस स्वतंत्रता का उपयोग शरीर के लिए अवसर के रूप में न करें, बल्कि प्रेम के माध्यम से एक दूसरे की सेवा करें।

परमेश्वर ने हमें इसलिए बुलाया है कि हम पापपूर्ण जीवन न जिएँ, बल्कि उसके लिए जिएँ और दूसरे विश्वासियों की सेवा करें। कुलुस्सियों 3:15, सामंजस्य, शांति, सामंजस्य। मसीह की शांति, जिसके लिए तुम भी एक शरीर में बुलाए गए हो, तुम्हारे हृदयों पर राज करे।

यह श्लोक मुझे सालों पहले हेर्मेनेयुटिक्स पढ़ाने की याद दिलाता है, और छात्र जानते थे कि मैं उन्हें धोखा देने की कोशिश कर रहा हूँ। मैं उन्हें यह दिखाने की कोशिश कर रहा था कि हमारी पूर्व-समझ, हमारी सांस्कृतिक कंडीशनिंग बाइबल की हमारी समझ को कैसे प्रभावित करती है। और इसलिए मैंने कहा, अपने शब्दों में इस श्लोक का अर्थ लिखें, ताकि मसीह की शांति आपके दिलों में राज करे।

और हमेशा, उन्होंने लिखा, भगवान चाहते हैं कि हमारे दिल में शांति हो और हम चिंता न करें। और यह सच है; यह एक बाइबिल सत्य है और एक बहुत ही अमेरिकी अनुप्रयोग है। लेकिन यह श्लोक हमारे दिलों और हमारी व्यक्तिगत भलाई के बारे में बात नहीं करता है।

श्लोक में ही कहा गया है, मसीह की शांति, जिसके लिए तुम एक शरीर में बुलाए गए हो, तुम्हारे हृदय पर राज करे। यह एक सामूहिक श्लोक है। यह शांति के बारे में बात कर रहा है, न कि वह जो हमारे हृदय में समझ से परे है। यह बाइबिल में है, लेकिन यहाँ नहीं।

यह साथी भाइयों और बहनों के बीच सामंजस्य के बारे में बात कर रहा है। कुलुस्सियों 3.15, और मसीह की शांति को अपने दिलों में राज करने दें। ऐसा लग रहा था जैसे कि यह श्लोक मेरे प्यारे छात्रों के साथ बस यहीं रुक गया, जिसके लिए आपको बुलाया गया था वास्तव में आपको एक शरीर में बुलाया गया था।

हाँ, परमेश्वर चाहता है कि हमारे हृदय में शांति हो। फिलिप्पियों 4, 6, और 7. लेकिन यहाँ वह इस तथ्य के बारे में बात कर रहा है कि परमेश्वर ने हमें मसीह में उद्धार के लिए बुलाया है, जिसके परिणामस्वरूप हम कलीसिया की एकता, शांति और मसीह में अन्य विश्वासियों के साथ सामंजस्य की खोज करते हैं। 1 थिस्सलुनीकियों 4.7, परमेश्वर ने हमें अशुद्धता के लिए नहीं, बल्कि पवित्रता में रहने के लिए बुलाया है।

2 तीमुथियुस 1:9. 1 पतरस 2:21 की तुलना करें, तो मैं जो कहना चाह रहा हूँ, वह यह है कि यदि हम बुलावे के सिद्धांत के कार्य पर ध्यान देते हैं, तो इसका उद्देश्य मुख्य रूप से धार्मिक बहसों को सुलझाना नहीं है। हालाँकि मुझे लगता है कि हमारे लिए ईश्वर पर भरोसा रखना अच्छा है, जो प्रदर्शनात्मक और आंतरिक रूप से बुलाता है, और बाहरी बुलावे के माध्यम से प्रभावी ढंग से बुलाता है, हमारा भरोसा लोगों की स्वतंत्र इच्छा पर नहीं बल्कि ईश्वर में है कि वह अपने वचन के माध्यम से काम करे। लेकिन ईश्वर चाहता है कि बुलावा स्वतंत्रता, सद्भाव, पवित्रता और यहाँ तक कि दुख सहने की इच्छा भी पैदा करे।

1 पतरस 2:21, तुम इसी के लिए बुलाए गए हो क्योंकि मसीह ने भी तुम्हारे लिए दुख उठाया और तुम्हें एक आदर्श दिया है कि तुम भी दुख उठाओ, उसके पदचिन्हों पर चलो। 1 पतरस 2:21, अल्पकालिक प्रभावों के साथ-साथ, परमेश्वर यह भी चाहता है कि उसका बुलावा विश्वासियों के जीवन में शानदार दीर्घकालिक प्रभाव डाले। इफिसियों 1:18 , मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारे हृदय की आँखें ज्योतिर्मय हों, ताकि तुम जान सको कि उसके बुलावे की आशा क्या है।

यही अनन्त जीवन की आशा है। यही अनन्त जीवन और नई पृथ्वी पर पुनर्जीवित शरीर की आशा है। 2 थिस्सलुनीकियों 2:14, उसने आपको हमारे सुसमाचार के माध्यम से इसके लिए बुलाया, ताकि आप हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा प्राप्त कर सकें।

यही वह उद्देश्य है जिसके लिए परमेश्वर ने हमें बुलाया है, ताकि हम मसीह की महिमा प्राप्त करें। निश्चय ही, यह हमें अब उससे प्रेम करने, उसकी आराधना करने, अपने पूरे दिल से उसके लिए जीने के लिए प्रेरित करता है। इब्रानियों 9:15, यीशु एक नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि बुलाए गए लोग अनन्त विरासत का वादा प्राप्त कर सकें।

इन सभी अंशों में, परमेश्वर ने बुलावे को न केवल मसीही ज़िम्मेदारियों और कर्तव्यों से जोड़ा है, जैसा कि हमने अभी देखा, बल्कि अंतिम समय, यानी हमारी अंतिम आशा से भी जोड़ा है। यह हमें प्रभु के लिए जीने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए दिया गया है। 1 पतरस 3:8-9, आपको इसके लिए बुलाया गया है, ताकि आप आशीर्वाद प्राप्त कर सकें।

1 पतरस 5:10, सारे अनुग्रह का परमेश्वर, जिसने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिये बुलाया है, तुम्हारे थोड़ी देर तक दुःख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध करेगा, और स्थिर करेगा, और बलवन्त करेगा, और सम्भालेगा। 1 पतरस 5:10, सारे अनुग्रह का परमेश्वर, जिसने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिये बुलाया है। हल्लिलूय्याह।

इसके साथ, हम इस व्याख्यान को समाप्त करते हैं, और हम पुनर्जन्म के सिद्धांत पर, प्रभु की इच्छा से, अगला व्याख्यान शुरू करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा उद्धार पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 9 है, चुनाव, व्यवस्थित सूत्रीकरण, संख्या 4: विश्वास, सुसमाचार, और बुलावा।

.